जीवन की खुली पाठशाला को पढ़ाता 'एक था ठुनठुनिया'

प्रीति प्रसाद
शोधार्थी, सिक्किम विश्वविद्यालय

सारांश:
प्रकाश मनु ने अपने 'एक था ठुनठुनिया' उपन्यास में बालमन के सहज, सरल एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति का चित्रण किया है। उपन्यास का बाल पात्र ठुनठुनिया बड़े आसान तरीकों से अपनी समस्याओं का समाधान कर लेता है। इसके साथ ही उसे आशु-कविता करना, बाँसुरी बजाना, मिटटी के खिलौने बनाना और कठपुतली नाच बहुत पसंद है। वह भालू बनकर जहाँ गाँववालों को डराता है वहीं भालू नाच कर सब का मनोरंजन भी करता है। ठुनठुनिया अपनी माँ के साथ अपने दोस्तों एवं रग्घू चाचा और मानिकलाल से बहुत प्रेम करता है। यही कारण है कि जब उसके जीवन में बदलाव आता है तो वह अपने करीबी सभी लोगों को साथ लेकर आगे बढ़ने की सफल कोशिश करता है। उपन्यास में पर्यावरण, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आतंकवाद और अस्मिता संबंधी कई समस्याओं का उल्लेख हुआ है। ठुनठुनिया अपने बाल सुलभ चेतना द्वारा आसानी से इन सबका निवारण कर लेता है। क्योंकि वह जिंदगी के अनुभवों को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्व देता है। पात्र के चरित्र विकास में कहीं भी कृत्रिमता का एहसास नहीं होता है। बाल पात्र के माध्यम से मनु जी ने पाठकों में बाल-चेतना के साथ-साथ मानवीय चेतना को विकसित करने का उपक्रम किया है। जिससे की वे मामले की गंभीरता को भी समझ ले और उनके होंठों की मुस्कान भी बनी रहे।

बीज शब्द: *बालमन, जिंदादिल बालक, ग्रामीण-बोध, तुकबंदियाँ, बालमनोविज्ञान, प्रतिकृति, सामूहिकता की भावना, सामासिकता, संवाद, ललित कला*

'एक था ठुनठुनिया' बाल साहित्यकार प्रकाश मनु द्वारा रचित एकल चरित्र प्रधान बाल उपन्यास है। सन् 2006 में प्रकाशित इस बाल उपन्यास को 2010 में साहित्य अकादमी के प्रथम बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पूरा उपन्यास ठुनठुनिया नामक पात्र के आसपास संरचित है। सभी गौण पात्र मुख्य पात्र के इर्दगिर्द घूमते हैं। यह पात्र पूरे उपन्यास में अपनी चारित्रिक विशेषताओं और अपने संवादों की सहजता, मुखरता एवं अपने व्यंग्य शैली के कारण आद्योपांत बना रहता है।

सामाजिक रूप से पात्र का विश्लेषण करें तो पाएँगे कि वह निम्न वर्गीय पात्र है। अपनी माँ का एकमात्र सहारा जिसके पिता नहीं है। बचपन से ही ठुनठुनिया की माँ को उससे कई उम्मीदें है। साथ ही माँ ठुनठुनिया में अपने पति को देखने की अभ्यस्त हो चुकी है तथा आशा लगाए बैठी है कि "वह तुम्हारा और मेरा नाम ऊँचा करेगा।"[1] ठुनठुनिया अपने सेवाभाव और सहयोगी प्रवृत्ति के कारण सबका प्रिय है। परंतु पढ़ाई-लिखाई में उसका मन नहीं लगता। विभिन्न ललित कलाओं में रूचि होने के कारण वह उन्हें सीखता है। उपन्यास के मध्य में विद्यालयी शिक्षा पूरा करने की इच्छा बस यूँही ठुनठुनिया के हृदय में नहीं कौंधती है। इसके पीछे चरित्र के विकसित होने की एक पूरी कहानी छिपी है।

उपन्यास पढ़ते हुए देखते है कि ठुनठुनिया ने कम समय में कठपुतली नाच की बारीकियों को सीख लिया है और अपनी कला से धन अर्जन करने लगता है। इस परिस्थिति में भी वह अपनी माँ को नहीं भूलता। माँ को चिठ्ठी न लिख पाने और उनसे न मिल पाने का गम उसे सदा बना रहता है। इस पर जब उसे अपने शिक्षक अयोध्या बाबू से माँ की बिगड़ी हुई तबियत की खबर मिलती है तो वह सब कुछ छोड़कर माँ के पास चला आता है। माँ की बिगड़ी

सेहत का उत्तरदायी स्वयं को मानते हुए ठुनठुनिया माँ के सपनों को पूरा करने का प्रण लेता है। वह कहता है- "माँ, तेरा सपना था कि मैं खूब पढ़ूँ-लिखूँ...पढ़-लिखकर कुछ बनूँ! मैं वादा करता हूँ कि अब मैं खूब दिल लगाकर पढ़ूँगा। तेरी याद हर रोज आती थी माँ, पर मैं सोचता था, खूब पैसा कमाकर ले जाऊँ, ताकि तेरे कष्ट मिट जाएँ।"[2] ध्यातव्य हो कि वह अपनी माँ को खुश देखना चाहता है जिसके लिए उसने पैसे कमाने का रास्ता चुना। अंतत: वह पाता है कि जिसको खुश करने के लिए वह इतनी दूर आया है वह तो उसके वियोग में बीमार पड़ी हुई है। जीवन के इस कटु सत्य ने उस बालमन को व्यस्क बना दिया। जिसने ठुनठुनिया के जीवन को एक नई दिशा प्रदान की।

जीवन में आए इस बदलाव ने ठुनठुनिया को एक सफल व्यक्ति बनने का रास्ता सुझाया। अपनी सफलताओं में वह अपने मित्रों को भी साझेदार बनाता है। खिलौने बनाने वाले रग्घू चाचा हो या फिर कठपुतली नाच का साथी मानिकलाल या फिर बचनपन के दोस्त गंगू, मनमोहन, सुबोध और मीतू सभी के साथ मिलकर वह लोक-कलाओं की 'भारतीय कला परंपरा' नामक संस्था का बखूबी संचालन करने लगता है।

उपन्यास का बाल पात्र ठुनठुनिया हँसोड़, साहसी, जिंदादिल और ग्रामीण-बोध से संपन्न बालक है। उपन्यास के विकास के साथ उसके व्यक्तित्व के कई और भी पहलू हमारे सामने उभरते है। ठुनठुनिया के चरित्र के संबंध में उपन्यासकार लिखते है कि- "वह बड़ा खुशमिजाज, हरफनमौला और हाजिर जवाब है। इसीलिए बड़ी से बड़ी मुश्किलों के बीच रास्ता निकाल लेता है।"[3] ठुनठुनिया एक बहादुर, आशु-कवि, पशुप्रेमी, जिज्ञासु, वाक्यपटु और कलाप्रेमी पात्र है। उपन्यास के आरंभ में ठुनठुनिया बड़े साहस के साथ गजराज सिंह को हाथी बाबू का नाम देता है। मनपसंद मालपूए का नाम याद रखने के लिए झट से तुकबंदियाँ बना डालता है। आगे भी भालू बनकर अपने कारनामे दिखाने के क्रम में वह बहुत सुंदर गीत गाता है। उसकी कविताई का एक नमूना है- "भालू रे भालू/ अम्माँ, मैं तेरा भालू!/ अभी-अभी चलकर जंगल से आया भालू,/ ला खिला दे, ला खिला दे, दो-चार आलू!/ अम्माँ, मैं नहीं टालू,/ अम्माँ, मैं नहीं कालू,/ अम्माँ, मैं तेरा भालू...।"[4]

ठुनठुनिया को कोई भी परिस्थिति, कोई भी घटना या वस्तु आकर्षित करती है तो वह उसे संजोने का प्रयास करता है। संजोने का जरिया यह है कि वह उन्हें याद रखने की कोशिश करता है। वह उन्हें तुरंत गीत, कविताई, तुकबंदियों में परिवर्तित कर लेता है। ठुनठुनिया द्वारा कही गई पंक्तियाँ सिर्फ कविताई नहीं है बल्कि लेखक तुकबंदी और पात्र दोनों के माध्यम से कुछ संकेत करते है। उपन्यास की घटनाओं को देखे तो पाते है कि ठुनठुनिया का दिल सफ़ेद कागज की तरह है। चाहे वह जमींदार गजराज सिंह का प्रसंग हो या फिर स्कूल में दाखिला लेते समय चूहा पकड़ने की घटना हो। जो भी ठुनठुनिया के मन में है उसे वह कह देता है। यह उसकी सादगी है। कहीं न कहीं यही सादगी उपन्यासकार अपनी युवा पीढ़ी में संचारित करना चाह रहे है । यह सादगी तभी संचालित होगी जब यह न सिर्फ बच्चों में हो बल्कि उनके परिवार के लोगों में भी हो। ठुनठुनिया में यह सादगी उसकी माँ से आई है। उसकी माँ उससे कभी झूठ नहीं बोलती है। वह ठुनठुनिया के चरित्र को गढ़ने का प्रयास नहीं करती बल्कि अपने व्यवहार से उसे स्वयं ही निर्मित होने देती है। ठुनठुनिया की माँ न चाहते हुए भी सिर्फ उसकी ख़ुशी के लिए, उसे कठपुतली नाच सीखने के लिए, खुद से दूर जाने देती है। बाल मनोविज्ञान के संदर्भ में खलील जिब्राल का हवाला देते हुए ओमप्रकाश कश्यप अपने एक लेख (हिंदी बालसाहित्य: परंपरा एवं आधुनिक संदर्भ) में लिखते है- "तुम उन्हें अपना प्यार दे सकते हो, लेकिन विचार नहीं क्योंकि उनके पास अपने विचार होते हैं।"[5] माँ उसे हमेशा एक सकारात्मक माहौल देती है। कहीं न कहीं उपन्यासकार संकेत देते है कि बच्चों के पालन-पोषण की विधि क्या होनी चाहिए। उनसे संवाद स्थापित करने की शैली क्या हो सकती है।

यह बाल उपन्यास सामाजिक तंत्र के विभिन्न परतों की वास्तविकता को सामने लाता है। एक सजग लेखक के रूप में उपन्यासकार यह काम अपने पात्र के माध्यम से इतने हास्य और व्यंग्य के साथ करते हैं कि पाठक उसमें रम जाता है। पाठक को एहसास नहीं होता है कि ठुनठुनिया प्रतिघात कर रहा है। वह पूरे तंत्र पर सवालिया निशान लगा रहा है। उपन्यास में जंगल कटाई जैसे गंभीर मसले को कितनी ही सहजता से उठाया गया है। पेड़ कटाई की दुर्नीति को सामने लाकर ठुनठुनिया इसका क्रेडिट स्वयं नहीं लेता है। बल्कि इसका क्रेडिट वह एक मासूम गिलहरी को देता है। दूसरी ओर राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था पर सवाल किया गया है। नौका-यात्रा करते हुए ठुनठुनिया और उसके मित्रों को रहस्यमय गुफा के गुप्त रहस्य का पता चलता है। इसकी जानकारी जब वे पुलिस को देना चाहते है तो उनके मन में संदेह है कि पुलिस हम बच्चों की बातों पर विश्वास करेगी भी या नहीं। इसलिए ठुनठुनिया अपने मित्रों के साथ मिलकर जमींदार गजराज बाबू के पास जाने का विकल्प अपनाता है और कहता है- "वे हमारे साथ चलेंगे तो पुलिस भी कुछ-न-कुछ जरुर करेगी।"[6] आस-पास के माहौल से प्रभावित बालमन जान चुका है कि व्यवस्था भी शक्ति-संपन्न लोगों की ही बात सुनता है। उपन्यास में धूर्त व्यापारी चमनलाल के द्वारा व्यापारिक तंत्र के खोखलेपन और मुखिया बुलाकीराम के माध्यम से व्यवस्था की घटती शाख को अभिव्यक्त किया गया है।

उपन्यास में पेड़ कटाई के माध्यम से पर्यावरण समस्या, धूर्त व्यापारी के माध्यम से भ्रष्टाचार की समस्या और ठुनठुनिया के नाम के माध्यम से विगत तीन-चार दशकों से

चल रही अस्मिता की समस्या को रेखांकित किया गया है। 'मैं' कौन हूँ? मेरा नाम क्या है? मेरा नाम क्या होगा या होना चाहिए? आदि अस्मितामूलक विमर्शों को उपन्यास सामने लाता है। अपने पात्रों के द्वारा यह प्रमाणित करता है कि अंतत: किसी और का प्रतिरूप बनना कितना खोखला होता है। हरिश्चंद्र नाम रख लेने भर से कोई सत्यवादी नहीं बन जाता। भिखारी का नाम अशर्फीलाल होने से जरुरी नहीं कि वह अशर्फीयुक्त हो। ठीक उसी प्रकार जैसे उपन्यास में सेठ का नाम छदमिलाला है। नाम से ध्वनित होता है कि यह किसी गरीब का नाम है पर वह एक धनी सेठ है। लेखक इन प्रसंगों के माध्यम से छद्म व्यवस्था में निहित दोहरे चरित्र को समाने लाते हैं। जो मूलत: नाम से कुछ और एवं काम में कुछ और के दुराग्रह पर अवलंबित होते हैं। इसके प्रतिपक्ष स्वरुप वे ठुनठुनिया के नाम का सफल प्रयोग करते हैं।

उपन्यास में प्रकाश मनु ने ठुनठुनिया का चारित्रिक विकास आदर्श पात्र के अनुरूप किया है। ध्यान देने की बात है कि यह आदर्श प्रेमचंदयुगीन आदर्श नहीं है जहाँ अचानक ह्रदय परिवर्तन हो जाता है। माँ के बार-बार कहने पर भी ठुनठुनिया का मन पढ़ने-लिखने में नहीं लगता। अपनी इच्छा के अनुकूल काम करते हुए वह पैसे कमाकर माँ को खुश करने की कोशिश करता है और उसमें विफल होता है। अपने सबसे प्रिय को इतने प्रयासों के बाद भी दुखी देखकर ठुनठुनिया अपने जीवन में बदलाव लाता है। यह बदलाव जहाँ एक तरफ उसे तरक्की की राह पर ले जाती है वहीं इसके दूरगामी प्रभाव के रूप में उससे जुड़े अन्य लोगों के जीवन को भी संवार देती है। पात्र के आदर्श रूप की व्याख्या करते हुए उपन्यासकार लिखते है कि- "उपन्यास में यह किसी आडंबर के साथ नहीं आता है। एक बच्चे की सहज इच्छा की तरह आता है। जो उसके जीवन का सबसे सुंदर सपना भी है। ठुनठुनिया खेल-खेल में और अनायास ही वह सब कर डालता है। जिसे बड़े लोग बड़े आडंबर के साथ करते है।"[7] पूरा उपन्यास चरित्र के विकास के साथ ही ह्रदय परिवर्तन की भी विकास यात्रा है।

यह उपन्यास नाटकीय शैली में रचा गया है जो इसे रोचक और पठनीय बनाता है। कथा में नाटक हो रहा है और वह लगातार इतना आकर्षक है कि कहीं न कहीं लोग सांसे रोक कर रह जाते है। नबाब अलताफ़ हुसैन कहते है-"ओह, जान अधर में अटकी ही रही, जब तक रज्जब अली को ठीक-ठाक हालत में, एकदम सलामत वापस आते न देख लिया।"[8] जिज्ञासा को बनाए रखना और उस स्तर पर पाठक को ला देना अपने आप में लेखक एवं उपन्यास की बड़ी उपलब्धि है। उपन्यास को गढ़ने और मढ़ने में प्रकाश मनु माहिर है। इस अनुक्रम में उपन्यास के संवाद अपने पथ से कहीं भी विचलित नहीं होते हैं। उपन्यास की शैली नवीनता लिए हुए है। उपन्यासकार ने छोटे-छोटे कुनबों में या छोटी-छोटी कहानियों में कथा को बड़ी ही संजीदगी और बड़े ही लचक एवं मलंग भाव से गुथा है। जैसे एक शिल्पी हल्के हाथों से मूर्ति को मनचाहा आकार देता है और विभिन्न सौन्दर्य प्रसाधनों से उसे सजाता चला जाता है। ठीक उसी प्रकार कथाकार प्रकाश मनु ने भी इस उपन्यास में निम्न वर्गीय एक सहज चरित्र का निर्माण किया है और उसे नाना मानवीय गुणों एवं मूल्यों से बड़ी खूबसूरती से सजाया है। उपन्यास में क्रमबद्धता से अधिक पड़ाव है जो अंत में जाकर एक कड़ी की भांति काम करते दिखते हैं।

उपन्यास को समझने के दो स्तर हो सकते है- पहला संवाद के स्तर पर और दूसरा घटनाओं के स्तर पर। संवाद के स्तर पर पहली अवस्था है माँ और बेटे के बीच का संवाद, दूसरा बेटे का समाज के साथ संवाद और तीसरी अवस्था है बेटे का आत्मावलोकन। इन घटनाओं के माध्यम से इस उपन्यास की समीक्षा करें तो हम पाएंगे कि ठुनठुनिया विभिन्न समय-काल में अपनी दुनिया के जीवन, उससे संबंधित समस्याओं तथा उनके सरल और सहज समाधान को दिखा रहा है। ठुनठुनिया नामक पात्र न सिर्फ बालमन के बचपने को दिखाता है बल्कि बचपन के संसार को दिखाते हुए बड़ों के संसार का भी निदर्शन करवाता है। वह दुनिया जिसे वे देखना नहीं चाहते या फिर देखकर बचकानी हरकते कहकर हँस भर देते हैं।

सफलता का मूल मंत्र सामूहिकता की भावना का विस्तार करना है और उपन्यास में यह कार्य ठुनठुनिया सरलता से करता है। वह अपनी सफलता को अकेले सेलिब्रेट नहीं करता है। उसके जेहन में स्वार्थपरकता कहीं नहीं है। वह सामूहिकता से लबरेज है। सामासिकता की भावना उसमें इस कदर बसी हुई है कि जैसे-जैसे सफलता के पायदान पर वह आगे बढ़ता जाता है, अपने अंत:वासियों, अपने गाँववालों के विकास के लिए सोचता है। अपने सुख-दुःख में साथ दिए, झगड़े-फसाद, लड़कपन की लड़ाई के साथियों तक को वह नहीं भूलता है। उपन्यास में यह पात्र मानवीय मूल्यों के संपोषक के रूप में उभरता है।

उपन्यास में छोटे-छोटे प्रकरणों में बहुत सी ऐसी बातें कही गई है जिनपर ध्यान देने की आवश्यकता है। अपने समय को दर्शाते हुए लेखक सामाजिक और वैश्विक कई सारी समस्याओं, पेचीदगियों को बड़े संजीदा और हास्यपरक ढंग से सुलझाते है। पंडितजी द्वारा ठुनठुनिया का भाग्य बाँचने के प्रसंग में वह कहता है- "जो आदमी आसमान की ओर देखकर चलता है और जिसे धरती की इतनी खबर भी नहीं है कि कब उसका पैर तालाब में फिसला और तालाब में गिरकर वह हाय-हाय करने लगा, वह भला किसी दूसरे का भाग्य क्या बाँचेगा।"[9] उक्त कथन सामाजिक बाह्यडम्बरों पर गहरा प्रहार है। उपन्यास में वर्णित आर्षवाक्यों के द्वारा उपन्यासकार सभी के लिए खुले मन से नवीन जीवनदृष्टि प्रस्तावित करते हैं। ठुनठुनिया द्वारा यह कहलाना कि- "माँ, पढ़ाई खाली किताबों से थोड़ी ही होती है। मैं तो जीवन की खुली पाठशाला में पढ़ना

चाहता हूँ।"[10] 'खुली पाठशाला' से आशय मनुष्यता के विस्तार से है। मनुष्य ने सिद्धांत और व्यवहार के अंतर को पाटने के बजाय उसे और भी गहरा कर दिया है। फलत: विद्यालयी ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान में अंतर्विरोध बना रहता है। लेखक ने ठुनठुनिया जैसे पात्र की निर्मिति कर उन अंतर्विरोधों के सम्मुख एक विकल्प प्रस्तुत किया है। उपन्यास के कथाक्रम में जीवन की खुली पाठशाला को प्रस्तावित करने का तरीका और उसकी प्रस्तुति संवेदनशील है। उसमें कहीं भी किसी धर्म, मजहब या विशेष संस्कृति का आग्रह नहीं है।

ठुनठुनिया का चारित्रिक विकास हो चाहे उपन्यास का शिल्प सबका स्वाभाविक विकास होता है। इनमें कहीं भी मूल्यों को जोर-जबरदस्ती ठूँसा नहीं गया है। संवादों को गंभीर, कठिन और पेचीदा नहीं बनाया गया है। उपन्यासकार शब्द शिल्पी है। बाल साहित्य का सृजन कितना श्रमसाध्य है यह उपन्यास के परत-दर-परत खुलने से पता चलता है। लेखक ने चिंतन के उच्च स्तर से उपन्यास का निर्माण किया है जिससे कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। बाल कथा द्वारा वे लोगों में उस चेतना का विकास करते हैं जो उन्हें मायूस नहीं करती है। लेखक का प्रयास है कि पाठक के होंठो पर हँसी भी बनी रहे और वे मामले की गंभीरता को भी समझ लें। साथ ही वे समस्या के समाधान की राह भी बताते चलते हैं। उपन्यास में मानवीय संवेगों का परिवर्तन और प्रत्यावर्तन होता है। इस रूप में प्रकाश मनु अपने सामान्य पात्रों के साधारण कथाओं के असाधारण कथाकार है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. मनु, प्र.(2019). *प्रकाश मनु के संपूर्ण बाल उपन्यास(खंड-1).* दिल्ली : इंद्रप्रस्थ प्रकाशन.पृष्ठ संख्या-111
2. वही.पृ-190
3. मनु, प्र. (2021). बाल उपन्यास: बच्चों की एक अलमस्त दुनिया (आत्मकथ्य). *कंचनजंघा,* वर्ष 01, अंक 02, 138. http://www.kanchanjangha.in/wp-content/uploads/2021/04/17-%E0%A4%86%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6-%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A5%81-%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%82-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A5%87-%E0%A4%AC%E0%A4%BE.%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B8-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B6%E0%A5%8B.-%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6-%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A5%81-1.pdf
4. मनु, प्र.(2019). *प्रकाश मनु के संपूर्ण बाल उपन्यास(खंड-1).* दिल्ली : इंद्रप्रस्थ प्रकाशन.पृ-128
5. कश्यप, ओ. (2009) हिंदी बालसाहित्य:परंपरा एवं आधुनिक संदर्भ. https://omprakashkashyap.wordpress.com/2009/04/25/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%80-%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%82%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%BE/
6. मनु, प्रकाश.(2019). *प्रकाश मनु के संपूर्ण बाल उपन्यास(खंड-1).* दिल्ली : इंद्रप्रस्थ प्रकाशन.पृ-172
7. मनु, प्र. (2021). बाल उपन्यास: बच्चों की एक अलमस्त दुनिया (आत्मकथ्य). *कंचनजंघा,* वर्ष 01, अंक 02, 139. http://www.kanchanjangha.in/wp-content/uploads/2021/04/17-%E0%A4%86%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6-%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A5%81-%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%82-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A5%87-%E0%A4%AC%E0%A4%BE.%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B8-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B6%E0%A5%8B.-%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6-%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A5%81-1.pdf
8. मनु, प्रकाश.(2019). *प्रकाश मनु के संपूर्ण बाल उपन्यास(खंड-1).* दिल्ली : इंद्रप्रस्थ प्रकाशन.पृ-186
9. वही.पृ-156
10. वही.पृ-175